राष्ट्र निर्माण में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों की *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के आलोक में उपादेयता

संध्या यादव*
अमित कुमार**

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम देश के एयरोस्पेस वैज्ञानिक थे। इन्हें भारत के 'मिसाइलमैन' के नाम से भी जाना जाता है। 15 अक्तूबर को उनकी जयंती के दिन विश्व विद्यार्थी दिवस मनाया जाता है। वे भारत को 2020 तक विकसित राष्ट्र के रूप में प्रतिस्थापित करना चाहते थे। उनका सपना था कि 121 करोड़ (अब लगभग142 करोड़) भारतीयों के जीवन स्तर को उच्च स्तर तक लाकर, उन्हें उन सभी बुनियादी सुख-सुविधाएँ मुहैया कराई जाएँ, जिसके वे अधिकारी हैं। देश को गरीबी मुक्त कर अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाना, साथ ही 2022 तक अमेरिका और चीन के बाद भारत तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर दुनिया में अपनी पहचान बनाए। प्रति व्यक्ति आय में सुधार करने के साथ ही, भारत का प्रत्येक क्षेत्र यथा शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, व्यापार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भर बने। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सशक्त करने की कल्पना करती है, इसका उद्देश्य है, एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना, जो उच्च स्तर की हो, जिससे भारत वैश्विक पटल पर एक महाशक्ति के रूप में उभरे। इसमें पाँच स्तंभों को बताया गया है, जैसे— पहुँच, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य तथा जवाबदेही, जिनका अनुसरण कर हम विकसित भारत के सपने को साकार कर सकते हैं, साथ ही हमारे युवा राष्ट्रीय तथा वैश्विक चुनौतियों से सामना करने के लिए तैयार हो सकेंगे। वर्तमान में भारत सरकार भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से इस दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है, ताकि भारत को विश्व में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो सके। यद्यपि वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरी है, फिर भी भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के प्रयासों को और बढ़ावा देना है। यदि हम डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से आगे बढ़ते हैं तो निश्चित रूप से आगामी वर्षों में भारत विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में सम्मिलित हो जाएगा।

हमारा देश ऋषि-मुनियों की तपोभूमि रहा है, यहाँ समय-समय पर ऐसे लोगों का अवतरण होता रहा है, जिन्होंने देश हित के लिए कार्य किया और भारत को वैश्विक स्तर पर अपने कार्यों एवं आचरण से गौरवान्वित किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत में बहुत से स्वप्नद्रष्टा थे, जो भारत को समृद्ध एवं सशक्त बनाना चाहते थे, जैसे— जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, डॉ. भीमराव अंबेडकर आदि का सपना था कि देश को सम्पन्न बनाने के लिए, देश में फैली

**शोधार्थी,* शिक्षाशास्त्र विभाग, आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज 211002
***असिस्टेंट प्रोफेसर,* शिक्षाशास्त्र विभाग, आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज 211002

निरक्षरता, गरीबी, बीमारी एवं अज्ञानता का पूर्ण रूप से उन्मूलन किया जाए तथा प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार प्रदान किए जाएँ, तभी भारत समृद्ध राष्ट्र बन सकेगा। अतः स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को सुचारु रूप से आगे बढ़ाने का कार्य किया गया।

वैसे ही स्वप्नद्रष्टा, दार्शनिक, वैज्ञानिक, शिक्षाविद डॉ. कलाम थे, जो प्रत्येक व्यक्ति के सपने को साकार करना चाहते थे। उन्होंने विकसित भारत का सपना देखा, जिसमें सभी नागरिकों को सभी प्रकार की सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हों एवं उनका जीवन सुरक्षित हो, ताकि देश प्रगति एवं उन्नति के रास्ते पर चले। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भारत को 2020 तक विकसित राष्ट्र बनाने का सपना देखा था, इसके लिए उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया, ताकि 121 करोड़ (अब लगभग 142 करोड़) भारतीयों के चेहरे पर मुस्कान लाई जा सके एवं उन्हें एक समृद्ध व सुरक्षित भारत दे सकें।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम कहते थे कि भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी प्राप्त हो जाने से इसकी अर्थव्यवस्था में परिवर्तन आएगा। यह दुनिया का सबसे अधिक सशक्त एवं लाभप्रद अर्थव्यवस्था वाला देश बनेगा। सभी को उच्च स्तर की शिक्षा मिलेगी, साथ ही बेहतर स्वास्थ्य एवं सुरक्षा व्यवस्था होगी। अधिक-से-अधिक उच्च कोटि की वस्तुओं का निर्माण एवं निर्यात होगा, पर्यावरण स्वच्छता तथा कृषि में परिवर्तन देखने को मिलेगा, जिससे देश में खुशहाली व समृद्धि आएगी और गरीबी मिटेगी। अधिक-से-अधिक लोग रोजगार से जुड़ेंगे। नवयुवक रोजगार हेतु अपने देश से पलायन कर अन्य देशों में अपनी प्रतिभा दिखा रहे हैं, इस तरह से ज्ञान के बहिर्गमन में कमी आएगी। देश में ही उन्हें रोजगार की अधिक संभावनाएँ मिलेंगी। इस लक्ष्य को पाने में विज्ञान एवं तकनीकी की भूमिका अहम होगी (कलाम और राजन, 2020, पृ.1–2)। डॉ. कलाम के विचारों से प्रेरित *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी राष्ट्र को सुदृढ़ तथा सशक्त बनाने का प्रयास किया गया है, जिसका उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का विकास करना है, जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों, जिनमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति हो। इसका उद्देश्य ऐसे उत्पादक लोगों को तैयार करना है, जो सतत आर्थिक प्रगति, मानव पूंजी निवेश, निजी, सार्वजनिक तथा इंटर्नशिप जैसी व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर वैश्विक प्रतिस्पर्धा की मुख्यधारा में आ सकें एवं राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकें।

राष्ट्र निर्माण में युवा

डॉ. कलाम ने राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है। कलाम का यह भी मानना था कि विश्व में सबसे अधिक युवा आबादी भारत में है, इसलिए भारत को एक महाशक्ति होना चाहिए। अगर हम उस लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सके हैं तो हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को तार्किक तथा प्रतिस्पर्धी स्तर का बनाने की आवश्यकता है एवं अपने देश में ऐसे अवसर उपलब्ध कराने होंगे, जिससे युवाओं

की शक्ति का उपयोग अपने देश में हो सके, क्योंकि अधिकांश युवक अपने देश में अवसर एवं सुविधाओं के अभाव में अन्य देशों में जाकर अपनी सेवाएँ देते हैं। (कलाम और राजन, 2015 पृ. 155) उनका मानना था कि किसी राष्ट्र की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि उस राष्ट्र के युवाओं की स्थिति क्या है? यदि युवा इस भाव से कार्य करना शुरू कर दें कि, "मैं यह कर सकता हूँ और यह विश्वास है कि भारत एक विकसित राष्ट्र बनेगा" (कलाम और पोनरज, 2014, पृ. 252) तो भारत को विकसित राष्ट्र बनने से कोई भी ताकत रोक नहीं सकती। भारत युवाओं का देश है, जहाँ दुनिया के सबसे अधिक युवा रहते हैं। हाल ही में जारी यू.एन.एफ.पी.ए. की रिपोर्ट के आँकड़ों के मुताबिक दुनिया में 121 करोड़ युवा हैं, जिसमें से 21 प्रतिशत युवा भारत में मौजूद हैं (यू.एन.एफ.पी.ए. की रिपोर्ट, 2023)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी भारत को दुनिया का सबसे अधिक युवा जनसंख्या वाला देश माना गया है, जिसमें उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने पर बल दिया गया है और विश्वस्तरीय डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर, सीखने के बहुविषयक व बहुभाषिक आयामों, वर्चुअल लैब, पायलट अध्ययन, प्रौद्योगिकी शिक्षा, कला तथा मानविकी जैसे विषयों में भी ऐसे अवसर उपलब्ध हों, जिससे युवा रोजगार प्राप्त कर सकें और अपना योगदान देश हित में दे सकें। इनकी क्षमताओं को पहचान कर, राष्ट्र की उन्नति के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है तथा इस बात को ध्यान में रखते हुए कार्य करना होगा कि हमें भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है, जिससे भारत वैश्विक पटल पर अपनी छाप छोड़ सके।

वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था

शिक्षा प्रत्येक क्षेत्र के विकास के लिए उत्प्रेरक है। अर्थव्यवस्था के विकास में भी इसकी प्रमुख भूमिका है जो सतत आर्थिक प्रगति, देश में मानव पूँजी निवेश, व्यक्तियों की उत्पादकता तथा रचनात्मकता को सुनिश्चित करती है। कोई भी राष्ट्र शिक्षा पर व्यय किए बिना अपनी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ नहीं कर सकता। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी शैक्षिक निवेश को अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण मानते हुए, कुल सकल घरेलू उत्पाद का छह प्रतिशत खर्च करने की बात की गई है तथा यह भी बताया गया है कि वर्तमान में केंद्र एवं राज्य सरकार मिलकर केवल 4.43 प्रतिशत के आस-पास खर्च करती हैं, यह आँकड़ा दर्शाता है कि अधिकांश शिक्षित एवं विकासशील देशों की तुलना में यहाँ की सरकारें शिक्षा पर कम खर्च कर रही हैं (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* पृ. 99)।

एक तरफ भारत विकसित राष्ट्र बनने का सपना संजो रहा है, वहीं दूसरी ओर गरीबी, बेरोजगारी, महँगाई चरम सीमा पर है। साधारण व्यक्ति का जीवन स्तर दुर्लभ होता जा रहा है। इस समस्या का समाधान करना देश के समक्ष चुनौतीपूर्ण कार्य है। हालाँकि सरकार निरंतर प्रयत्नशील है कि इन समस्याओं का समाधान कर देश की अर्थव्यवस्था को और सुदृढ़ किया जा सके। वर्तमान में भारत अपनी अर्थव्यस्था में सुधार करते हुए दुनिया की पाँचवीं अर्थव्यवस्था बनकर उभरा है, जबकि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*

में भारत को विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनाने की कल्पना की गई है। वर्तमान में भारत का सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) 3737 अरब डॉलर है। वहीं 26854 अरब अमेरिकी डॉलर के साथ अमेरिका प्रथम स्थान और क्रमशः चीन, जर्मनी, जापान दूसरे, तीसरे व चौथे स्थान पर है (*फोर्ब्स इंडिया रिपोर्ट,* 2023)।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की संकल्पना जब डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने की थी उस समय (2014 में) भारत की अर्थव्यवस्था 2 ट्रिलियन थी और इस समय भारत की जी.डी.पी. 3.75 ट्रिलियन पहुँच चुकी है (विदेश मंत्रालय, भारत सरकार)। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का अनुमान था कि वर्ष 2022 तक देश की सकल घरेलू उत्पाद में भारत तीसरे पायदान पर पहुँचकर, अपना 75वाँ गौरवशाली वर्ष मनाएगा। उनके अनुसार भारत प्रति व्यक्ति आय में 2035 तक 50वें स्थान पर पहुँच चुका होगा तथा 2050 तक प्रति व्यक्ति आय में शीर्ष स्थान प्राप्त कर चुका होगा। वर्तमान में भारत की प्रति व्यक्ति आय निम्न अवस्था में है। यदि हम आँकड़ों को देखें तो भारत की स्थिति 197 देशों की सूची में वर्ष 2014 में 140वें स्थान पर थी, तो वहीं वर्तमान (वर्ष 2025) में 195 देशों की सूची में 143वें स्थान पर है जहाँ भारत विकसित राष्ट्र बनने का सपना संजो रहा है, वहीं इसकी स्थिति प्रति व्यक्ति आय में अंगोला जैसे देशों से भी कम है। अगर भारत की प्रति व्यक्ति आय की तुलना अमेरिका जैसे देश से करें तो हम अपने को लगभग 31 गुना कम पाते हैं (अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष रिपोर्ट, 2023)। आज भारत डॉ. कलाम के विजन का पालन करते हुए वैश्विक बराबरी की बात नहीं कर रहा है।

डॉ. कलाम ने विकसित भारत के निर्माण के लिए चार लक्ष्य सुझाए थे। जो इस प्रकार हैं— प्रथम लक्ष्य के तहत, उन्होंने भारत की आर्थिक विकास दर को 2016–17 में दो अंकों में बढ़ाने तथा सकल घरेलू उत्पाद को 2022 तक तीसरे स्थान तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा था। दूसरे लक्ष्य के अंतर्गत डॉ. कलाम ने सामाजिक तथा आर्थिक विकास के बीच सामंजस्य बैठाने का प्रयास किया। तीसरे लक्ष्य के तहत डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भारत को आतंकवाद से मुक्त करने की बात कही, साथ ही सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए सैन्य व्यवस्था को भी सुदृढ़ करने एवं नारी सशक्तिकरण पर भी बल दिया। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपने अंतिम लक्ष्य में समरसतापूर्ण भारत का निर्माण करने पर बल दिया, जिसमें उन्होंने भारत की विविधताओं में धार्मिक, भाषायी, पारंपरिक, खानपान, रहन-सहन, संगीत, सांस्कृतिक तथा अन्य पहलुओं को सम्मिलित किया (कलाम और राजन, 2015, पृ. 160)। उपरोक्त लक्ष्यों के लिए शैक्षणिक प्रणाली, स्वास्थ्य प्रणाली, कृषि व्यवस्था, औद्योगिक व्यवस्था, विज्ञान एवं तकनीक को बढ़ावा आदि का समग्रता में विकास करना होगा। डॉ. कलाम ने इन लक्ष्यों के साथ शिक्षा पर भी अधिक-से-अधिक खर्च करने की बात कही है। उनका मानना था कि शिक्षा पर व्यय किए बिना अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ नहीं किया जा सकता। डॉ. कलाम के इन्हीं विचारों

को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी अपनाया गया है।

राष्ट्र निर्माण में शिक्षा

शिक्षा वह महत्वपूर्ण साधन है, जो व्यक्ति को नैतिक सदाचारी एवं स्वावलंबी बनाकर समाजोपयोगी बनाती है। यदि भारत के परिप्रेक्ष्य में देखें तो शिक्षा की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है, क्योंकि भारत निरंतर विकसित राष्ट्र बनाने की ओर अग्रसर है। शिक्षा प्रणाली में आवश्यक परिर्वन किए बिना, हम एक शिक्षित समाज की कल्पना नहीं कर सकते। डॉ. कलाम वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आवश्यक परिर्वन चाहते थे, उनका मानना था कि शिक्षा के व्यावसायीकरण पर रोक लगनी चाहिए। उनके शिक्षा संबंधी विचारों को देखें तो उन्होंने रचनात्मक तथा व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया, जिससे युवाओं को अधिक-से-अधिक रोजगार दिया जा सके। उनके अनुसार प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में रचनात्मक शक्ति का विकास करना था तथा माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन सकें। उच्च शिक्षण संस्थान ऐसे हों, जो वैश्विक संस्थानों से प्रतिस्पर्धा कर सकें (कलाम, 2013, पृ. 71)। उन्होंने दूरस्थ तथा वर्चुअल शिक्षा पर भी बल दिया, ताकि ग्रामीण अंचलों तक व्यावसायिक शिक्षा की पहुँच तथा सभी तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित हो और वे भी प्रतिस्पर्धा की मुख्यधारा में आ सकें (कलाम, 2013, पृ.71)। कोई भी राष्ट्र तब तक विकसित नहीं हो सकता जब तक उस राष्ट्र के युवा बेरोजगार हैं, इसके लिए डॉ. कलाम पूरी तरह शिक्षा प्रणाली को ही दोषी मानते हैं।

डॉ. कलाम के अनुसार— "कुशल श्रमशक्ति की उपलब्धता की मुश्किल स्थिति के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली को दोषी ठहराया जा सकता है, जो शिक्षार्थियों के प्रशिक्षण में रोजगार कौशल पर ध्यान न देते हुए, अधिक-से-अधिक थ्योरी (सिद्धांतों) पर ध्यान देती है" (कलाम और सृजनपाल, 2015, पृ. 70)। आगे उन्होंने कहा, "जब तक शिक्षा के गुणवत्ता के मुद्दे पर ध्यान नहीं दिया जाता, भारत में औद्योगिकीकरण की कोई भी पहल जैसे *मेक इन इण्डिया,* भारतीय युवाओं में निचले स्तर का ही सृजन करेगी, जबकि जटिल संचालनों को प्रवासी कर्मचारियों की सहायता से संभालना होगा। जब तक कार्यबल अपने कौशल-बलों को नहीं बढ़ाएँगे, तब तक नए ज़माने की अर्थव्यवस्था में अप्रासंगिक बने रहने का खतरा रहेगा" (कलाम और सृजनपाल, 2015, पृ,71)। अतः डॉ. कलाम शिक्षा में आवश्यक परिर्वन चाहते थे, जो वर्तमान परिस्थितियों से तालमेल बैठाते हुए भारतीय युवाओं को वैश्विक स्तर पर उनकी कार्यक्षमता से राष्ट्र को एक अलग पहचान दिला सके। वे इक्कीसवीं सदी को ध्यान में रखते हुए कहते हैं कि जीवन में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं, वर्तमान समाज सूचना एवं प्रौद्योगिकी पर आधारित है, यदि हम इन्हें अपने जीवन में स्वीकार नहीं करते हैं, तो दुनिया की भीड़ में पिछड़ जाएँगे। इसलिए उन्होंने ज्ञानवान समाज के निर्माण में तीन पक्षों को महत्वपूर्ण माना है, जिसमें

सामाजिक परिर्वन, धन निर्माण तथा ज्ञान का संरक्षण सम्मिलित है। उन्होंने ज्ञानवान समाज के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा है कि जो समाज शिक्षकों का आदर नहीं करता है, उस समाज का पतन अवश्यंभावी है, क्योंकि शिक्षक ही किसी समाज की दशा एवं दिशा तय करते हैं।

भारत प्राचीन समय से ही अध्ययन-अध्यापन का केंद्र रहा है, जिसमें ज्ञान प्राप्ति हेतु नालंदा, विक्रमशिला तथा तक्षशिला जैसे संस्थान प्रख्यात रहे हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी इन्हीं संस्थाओं को आधार बनाकर ज्ञान को पुनर्जीवित करने की बात की गई है। साथ ही, वैश्विक महत्व की इस समृद्ध विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखने की आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षा में शिक्षक की भूमिका को केंद्र बिंदु माना गया है (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* पृ, 4–5)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में विद्यार्थियों को विषयवस्तु पढ़ाने से अधिक समस्या के समाधान, तार्किक एवं रचनात्मक चिंतन तथा समझने पर बल दिया गया है। इसके साथ ही इस शिक्षा नीति में आई.आई.टी., आई.आई.एम., सार्वजनिक विश्वविद्यालय, स्टार्टअप, इनक्यूबेशन सेंटर, प्रौद्योगिकी विकास केंद्र, सामाजिक अनुसंधान तथा अंतर विषयक अनुसंधान एवं नवाचारों पर बल दिया गया है। इस नीति में आजीवन सीखने की प्रक्रिया को जारी रखना और समय के साथ आने वाले परिवर्तन एवं चुनौतियों से लड़ने को भी सम्मिलित किया गया है (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, पृ. 60)। इस तरह देखें तो *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के विचार डॉ. कलाम के विचारों से समानता रखते हैं।

राष्ट्र निर्माण में स्वास्थ्य

डॉ. कलाम ने अपने लक्ष्यों में स्वास्थ्य शिक्षा एवं सुविधाओं पर भी ध्यान आकृष्ट किया है जिसके तहत कुशल प्रशिक्षित चिकित्सकों को तैयार करने तथा अस्पतालों की सुविधा उपलब्ध कर आमजनों को लाभान्वित करने पर बल दिया गया है। साथ ही, आधुनिकतम उपायों, आयुर्वेद तथा औषधि संबंधी इलाज पर भी बल दिया गया है। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एन.एम.सी.) द्वारा उपलब्ध जानकारी के अनुसार 2022 तक भारत में डॉक्टर एवं जनसंख्या अनुपात 1:834 है, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के तय मानक 1:1000 डॉक्टर के अनुपात से बेहतर स्थिति में है (स्वास्थ्य एवं कल्याण मंत्रालय)। वर्तमान समय में सरकार अपनी स्वास्थ्य प्रणाली पर कुल जी.डी.पी. का 2.1 प्रतिशत हिस्सा व्यय कर रही है। सरकार को अपनी स्वास्थ्य शिक्षा प्रणाली पर और अधिक खर्च करने कि आवश्यकता है, जिससे सभी को अच्छा एवं सस्ता स्वास्थ्य मिल सके। डॉ. कलाम कहते हैं कि, कोई भी समाज स्वस्थ हुए बिना उत्पादक नहीं बन सकता। अच्छा स्वास्थ्य, जीवन प्रत्याशा, शिशु मृत्यु दर, कुपोषण, टीकाकरण तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता को शिक्षा के माध्यम से ही प्रसारित किया जा सकता है (कलाम और सृजनपाल 2015, पृ. 8)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी शारीरिक एवं मानसिक सुधार की बात की गई है। साथ ही,

नियमित स्वास्थ्य जाँच, 100 प्रतिशत टीकाकरण, स्वास्थ्य कार्ड निगरानी तथा स्कूल बैग को हल्का करने पर बल दिया गया है। यह *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* प्रभावी शिक्षण के लिए पोषण तथा नियमित व्यायाम को भी सुनिश्चित करती है, क्योंकि अगर बच्चे शुरुआती दौर में ही कुपोषित या अस्वस्थ होंगे तो वे बेहतर शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ होंगे, इसलिए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी बच्चों के पोषण तथा स्वास्थ्य पर ध्यान दिया गया है (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, पृ. 13)।

राष्ट्र निर्माण में कृषि

डॉ. कलाम ने देश के विकास के लिए कृषि शिक्षा में अनुसंधानात्मक विकास को महत्वपूर्ण माना है। हमें बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के साथ ही, भरण-पोषण हेतु अपनी अर्थव्यवस्था को तीव्रता से बढ़ाना होगा। ऐसे में हमारे सामने आवास एवं खाद्यान आपूर्ति की समस्या आ सकती है। इस वर्ष 2023 में सरकार का अनुमान 330.5 मिलियन टन खाद्यान उत्पादन का है (कृषि एवं कल्याण मंत्रालय)। डॉ. कलाम का मानना था कि कृषि शिक्षा में आवश्यक परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। इसके लिए विज्ञान एवं तकनीकी का अधिक-से-अधिक सहारा लिया जाए, मिट्टी की उर्वरा क्षमता की जाँच की जाए कि कौन-सी फसल के लिए कौन-सी भूमि उपयुक्त है। वर्षा मुक्त खेती के साथ ही प्रति हेक्टेयर पैदावार को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया जाए, जिसके लिए कृषि शिक्षा में अनुसंधान तथा नवाचार को बढ़ावा देना होगा। परंतु इस बात पर ध्यान देना होगा कि हमारे स्वास्थ्य पर रासायनिक उर्वरक तथा आधुनिकतम उपायों का दुष्प्रभाव न पड़े। इसलिए जैविक उर्वरकों के प्रयोग पर अधिक-से-अधिक बल देना होगा। कृषि उत्पादों में होने वाला मुनाफा सीधा किसानों को हो, ताकि उनकी आय में वृद्धि हो तथा किसानों एवं मजदूरों की आर्थिक स्थिति में सुधार आए। जब तक देश में किसानों एवं मजदूरों की स्थिति में सुधार नहीं होगा, तब तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का सपना पूरा नहीं किया जा सकता।

इसके लिए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में कृषि शिक्षा के लिए इससे संबंधित विषयों को पुनर्जीवित करने की बात की गई है, कृषि शिक्षा को लेकर हालिया आँकड़ों को देखा जाए तो देश के विश्वविद्यालयों में कृषि विश्वविद्यालय का प्रतिशत नौ है, लेकिन कृषि और संबद्ध विज्ञान विषयों में नामांकन उच्चतर शिक्षा के कुल नामांकन का एक प्रतिशत से भी कम है। इसलिए इसमें कृषि और संबद्ध विषयों की क्षमता तथा गुणवत्ता दोनों पर ध्यान दिया गया है। साथ ही, ऐसे लोगों को प्रोत्साहन देने की बात की गई है, जो स्थानीय, पारंपरिक तथा उभरती हुई तकनीक को समझ सकें और उत्पादन शक्ति, जलवायु परिवर्तन तथा बढ़ती हुई जनसंख्या की पोषण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। कृषि में गुणवत्ता तथा नवाचार के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, एप्लीकेशन अनुसंधान तथा स्वास्थ्य, कृषि व जलवायु संकट जैसे वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान प्रयासों को बढ़ावा दिया गया है (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति* 2020, पृ. 77, 81, 94)।

निष्कर्ष

वर्तमान *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शिक्षा तथा राष्ट्र संबंधी विचारों को प्रतिबिंबित करती है। उनके विचारों से प्रेरित *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के सुझाए गए लक्ष्यों का अनुसरण कर हम भारत को वैश्विक पटल पर एक महाशक्ति के रूप में स्थापित कर सकते हैं। अंततः कलाम के विचारों की प्रासंगिकता हम शिक्षा, रोजगार, अनुसंधान, आविष्कार, कौशल विकास तथा तार्किकता के रूप में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में देख सकते हैं। इस लेख के द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया है कि भारत कैसे 2047 के लक्ष्यों को डॉ. कलाम के विचारों और *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की अनुसंशाओं के माध्यम से पूर्ण कर सकता है। साथ ही, डॉ. कलाम के विचार और *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* दोनों में ही शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार, आर्थिकी, सामाजिक तथा युवाओं की भूमिका के योगदानों को सुनिश्चित किया गया है, ताकि डॉ. कलाम के विकसित भारत की संकल्पना और भारत के विकसित राष्ट्र बनने के सपने को साकार किया जा सके। इस लेख के माध्यम से भावी पीढ़ियों में यह जागरूकता प्रसारित करने का प्रयास किया गया कि किस प्रकार वे डॉ. कलाम के विचारों और *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की अनुसंशाओं को पढ़कर अपने स्वर्णिम भविष्य का निर्माण कर राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकते है और भारत के 'वसुधैव कुटुम्बकम' की विचारधारा के साथ भारत के विश्व गुरु बनने की संकल्पना को साकार कर सकते हैं।

संदर्भ

कलाम, ए.पी.जे. अब्दुल और वाई.एस. राजन. 1998. *इंडिया 2020— ए विजन फॉर द न्यू मिलिनियम*. पृष्ठ संख्या 1–2. पेंगुइन बुक इंडिया, नई दिल्ली.

———. 2015. *भारत 2020 और उसके बाद*. पृष्ठ संख्या 155–160. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली.

कलाम, ए.पी.जे.अब्दुल और वी. पोनराज. 2014. *परिवर्तन की रूपरेखा*. पृष्ठ संख्या 214–252. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली.

कलाम, ए.पी.जे. अब्दुल. 2013. *भारत की आवाज*. पृष्ठ –71. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

कलाम, ए.पी.जे.अब्दुल. और वाई सुंदर. 2005. *महाशक्ति भारत*. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली.

कलाम, ए.पी.जे. अब्दुल. और सृजनपाल सिंह. 2015. *एडवांटेज इंडिया*. पृष्ठ संख्या 70–71. राजपाल एंड संस, नई दिल्ली.

कृषि एवं कल्याण मंत्रालय. 2023. 26 अक्तूबर 2023 को https://pib.gov.in/press.Release से प्राप्त किया गया.

फोर्ब्स इंडिया. 2023. 04 जनवरी 2024 को https://www.forbesindia.com/explainers/gdp-india से प्राप्त किया गया.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. पृष्ठ संख्या 4–5, 13, 60, 77, 81, 99. भारत सरकार, नई दिल्ली.

विदेश मंत्रालय. 2023. इंडियन इकोनॉमी अप बाय 87% फ्रॉम 2014— फाइनेंस मिनिस्टर. भारत सरकार 04 जनवरी 2024 को https://indbiz.gov.in/Indian-economy-up-by-finance minister से प्राप्त किया गया.

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष रिपोर्ट. 2023. 13 अक्तूबर 2023 को https://India.unfpa.org/en से प्राप्त किया गया.

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय. 2023. 7 नवंबर 2023 को https://pib.gov.indexm.aspx से प्राप्त किया गया.

———. 2023. 15 नवंबर 2023 को https://india.unfpa.org/topics/adolescents-and-youth से प्राप्त किया गया.

https://m.statisticstimes.com/economy/country//india-gdp-per-capita.php 28.03.2025 को प्राप्त किया गया.